शिवाचार्यश्रीजी का मंगलमय चातुर्मास प्रवेश हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न
चातुर्मास आध्यात्मिकता से परिपूर्ण है : शिवाचार्यश्रीजी
साधु सम्मेलन की प्रक्रिया प्रारंभ

आज प्रातः 9.15 बजे श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज अपने समस्त शिष्य मण्डली एवं स्थानीय श्रीसंघ के साथ जैन बाग से शोभा–यात्रा के रुप में बर्तन बाजार, कूलर चौक होते हुए एस0एस0 जैन सभा, मोती बाजार, मालेर कोटला पधारे । स्थानक भवन में प्रवेश कर उसी शोभा–यात्रा के रुप में सदर बाजार, छोटा चौक, चौधरियां मोहल्ला, भावड़ा मोहल्ला होते हुए लाल बाजार स्थित एस0एस0 जैन मॉडल सीनीयर सैकेण्डरी स्कूल पधारे जहाँ पर आचार्य भगवंत का अभिनन्दन समारोह हुआ । शोभा–यात्रा में स्थान–2 पर अनेक श्रद्धालुभक्तगणों ने अपनी भक्ति का परिचय देते हुए प्रभावनाओं के स्टॉल लगाये । आगे बच्चे अपने हाथों में जैन धर्म के जयकारों के बोर्ड लेकर चल रहे थे । पीछे बहिनें मंगल कलश धारण किए शोभा–यात्रा की शोभा बढ़ा रही थी । श्रद्धेय आचार्य भगवंत के साथ–साथ समस्त श्रीसंघ हर्षोल्लास के वातावरण में गगनभेदी जयकारों के साथ आगे बढ़ रहे थे ।

इस अवसर पर देवलोक में विराजित समस्त पवित्र आत्माएं हर्षित हो बरसात की धीमी'–धीमी बूंदे बरसाकर प्रवेश से पूर्व मंगल अभिषेक किया । शोभा–यात्रा जब एस0एस0 जैन सीनीयर सैकेण्डरी स्कूल पहुंची तो उसने भव्य अभिनन्दन समारोह का रुप धारण कर लिया । श्रद्धेय आचार्य भगवंत का आचार्य रुप में यह द्वितीय चातुर्मास एवं मुनिरुप में तृतीय चातुर्मास है । स्थानीय श्रीसंघ चातुर्मास को लेकर आनंदित है । अभिनन्दन समारोह में युवा मनीषी श्री शुभम् मुनि जी महाराज के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ तत्पश्चात् स्वागताध्यक्ष दानवीर सेठ श्री दीपक जी जैन का स्वागत एस0एस0 जैन सभा के प्रधान श्री रतनलाल जी जैन ने किया और उसके पश्चात् मुख्य अतिथि श्रीमान् कांतीलाल जी जैन अध्यक्ष जैन कांफ्रेंय, समारोह अध्यक्ष दानवीर सेठ श्री विश्व जी जैन, विशिष्ठ अतिथि समाज सेवक श्री कुलभूषण कुमार जैन, ध्वजारोहणकर्ता श्रीमती विनय सुरेश जी जैन लुधियाना एवं समारोह गौरव समाज रत्न श्री हीरालाल जी जैन, श्री नेमीचंद जी चौपड़ा प्रमुख मार्गदर्शक जैन कांफ्रेंस, श्री पारसमल जी छाजेड़ महामंत्री जैन कांफ्रेंस, श्री केसरीमल जी बुरड़ अध्यक्ष– जीवन प्रकाश योजना, श्री शेरसिंह जी जैन मंत्री जैन कांफ्रेंस आदि का स्वागत स्वागताध्यक्ष द्वारा सम्पन्न हुआ । साथ ही ध्वजारोहण की रस्म श्रीमती विनय सुरेश जी जैन के साथ समस्त महानुभावों ने की । तत्पश्चात् एस0एस0 जैन मॉडल सीनीयर सैकेण्डरी स्कूल की बालिकाओं ने स्वागत–गीत प्रस्तुत किया ।

इस अवसर पर समाजरत्न श्री हीरालाल जी जैन ने अपनी भावनाएं अभिव्यक्त करते हुए कहा कि– आज का यह मंगल दिवस मंगल कलश का रुप धारण करेगा । उन्होंने श्रमण संघ का समग्र इतिहास प्रस्तुत करते हुए आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला । साथ ही श्रमण संघ की वर्तमान स्थितियों पर अपनी भावनाएं अभिव्यक्त करते हुए अपना समर्पण चतुर्थ पट्टधर के प्रति समर्पित किया । इस अवसर पर उन्होंने जैन कांफ्रेंस के आए हुए महानुभावों को साधु सम्मेलन की समग्र कार्यवाही भी सुनाई एवं उनके साथ श्रमण संघ की एकता एवं साधु सम्मेलन में पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया ।

इस अवसर पर श्री नेमीचंद जी चौपड़ा ने अपनी भावनाएं अभिव्क्त करते हुए कहा कि– आज तक मेरी इस उम्र में मैंने अनेकों संतों एवं आचार्यों की सेवाएं की परन्तु ऐसे सरलता से परिपूर्ण आचार्य के दर्शन आचार्य के रुप में पहली बार किए । आचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज सरलता की प्रतिमूर्ति है इन्होंने अपना सब कुछ त्यागकर पिछले वर्ष क्षमा–याचना के शुभ–अवसर पर समस्त श्रीसंघ एवं चतुर्विध संघ से क्षमा–याचना करते हुए श्रमण संघ में जो एकता का बिगुल बजाया यह युगों–युगों तक याद रहेगा । आपने हमें जो भी शिक्षाएं दी है एवं जो भी आपका मार्गदर्शन समय–समय पर प्राप्त होगा उसे हम यथावत लागू करने का पूरा पुरुषार्थ करेंगे ।

श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरीष मुनि जी महाराज ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि– आचार्य भगवंत का मालेर कोटला चातुर्मास कोई नया नहीं है । यह चातुर्मास उनका तीसरा चातुर्मास है । मुनि रुप में दीक्षा ग्रहण करने के बाद प्रथम चातुर्मास का सौभाग्य इसी मालेर कोटला श्रीसंघ को प्राप्त हुआ था । उसके बाद सन् 2003 में और सन् 2008 का चातुर्मास भी आपको प्राप्त हुआ है । चातुर्मास में अनेकों रचनात्मक कार्यक्रम होंगे । ऐसे महान् पुरुषों का दर्शन होना बहुत बड़ी बात है और आपके शुभ पुण्यों से इनका वर्षावास आपको प्राप्त हुआ है । इस चातुर्मास में आप सभी इनकी साधना से जुड़ें और इनसे अपने जीवन में कुछ सद्गुण अपनाएं ।

श्रद्धेय आचार्य भगवंत ने चातुर्मास मंगल प्रवेश पर अपनी भावनाएं अभिव्यक्त करते हुए कहा कि– यह चातुर्मास प्रवेश सबके लिए पूरे श्रीसंघ, पूरे मालेर कोटला शहर, पूरे पंजाब प्रान्त, भारतवर्ष एवं समस्त विश्व के लिए मंगलकारी हो । चातुर्मास अनेकों होते हैं और चले जाते हैं । यह चातुर्मास एक विशेषता को लेकर आया है । आप चातुर्मास में अध्यात्म की गहराईयों में प्रवेश करें । अध्यात्म वह रत्न है जो धन देकर खरीदा नहीं जा सकता । अध्यात्म वह परम धन है जो हमें मोक्ष की ओर ले जाता है । वर्तमान तीर्थकर अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी भगवान् को नमन । उनकी कृपा से आज यह मंगलमयी चातुर्मास प्रवेश सम्पन्न हुआ । प्रभो ! आपको नमस्कार करते हो । आप अरिहंत हो, भगवंत को धर्म की आदि करने वाले हो तीर्थ की स्थापना करने वाले हो । आप स्वयं सम्बुद्ध, पुरुषों में उत्तम एवं अनेक उपमाओं से उपमित हो पर मेरी श्रद्धा आपको उन सभी उपमाओं से और ऊपर देखती है । आप शरणागतों को शरण देने वाले हो । मोक्ष का मार्ग बताने वाले हो । मोक्ष का मार्ग बहुत सरल है, संसार का मार्ग बहुत कठिन है । धर्म हमें मुक्ति देता है । धर्म प्रदर्शन नहीं अन्तर्यात्रा है । हम धर्म एवं साधर्मी का सम्मान करें । चातुर्मास में किसी की निन्दा नहीं करेंगे । कोई साधु, कोई श्रावक किसी की निन्दा नहीं करेगा । निन्दा, अधोगति प्रदान करती है ।

इस चातुर्मास में आप संसार सागर से पार जाने की तैयारी कर लो । प्रत्येक जीव का आदर करो । सम्मान अपमान को समभाव से स्वीकार करो । प्रभु की आज्ञा ही हमारे लिए धर्म है और उनकी आज्ञा ही तप है । क्या है उनकी आज्ञा ? इस बात को हम इस चातुर्मास में जानेंगे । तीन बातें दुर्लभ है अरिहंत की वाणी, सिद्ध का स्मरण और साधु का संग । आपको तीनों बातें इस चातुर्मास में प्राप्त होगी । बस आपने उस दुर्लभता को जानकर अपने लक्ष्य को तय करना है । आपका लक्ष्य घर, परिवार, कपड़ा, मकान, पैसा नहीं है । आपका लक्ष्य पंचमगति सिद्धालय को प्राप्त करना है । इस चातुर्मास में साधना को अधिक महत्व देना है । ध्यान साधना शिविर आज से पांच वर्ष पूर्व भी आपने किए थे परन्तु वर्तमान में साधना शिविरों में शुद्ध वीतराग सामायिक का प्रशिक्षण प्रापत कर लो । यह सामायिक ऐसी है जिसे राजा श्रेणिक भी नहीं खरीद सका । इस चातुर्मास में भरपूर निर्जरा हो । चातुर्मास में हर पल हर क्षण का उपयोग हो । कैसे आप प्रतिपल प्रतिक्षण आनंद शांति कृतज्ञता सम्पन्नता समृद्धि में रह सकते हो इसका प्रशिक्षण आपको प्रस्तुत चातुर्मास में मिलेगा ।

इस अवसर पर आचार्यश्रीजी ने श्रमण संघ की वर्तमान गतिविधियों एवं साधु सम्मेलन पर अपने विचार रखते हुए फरमाया कि– श्रमण संघ में एकता, अखण्डता और संगठन की आवश्यकता है । आज सब पदों के पीछे दौड़ रहे हैं । मैं कहता हूं योग्यता के अनुसार पदों का चयन हो । पद लेने पर उस पद की जिम्मेदारी को समझा जाए । यह धर्म शासन बहुत मंगलकारी है । इस धर्म शासन की सेवा करना भी उतना ही मंगेलकारी है । हम पद लेने पर धर्मशासन की सेवा से पीछे ना रहे । सम्मेलन यानि सम्मिलन । आपस में मिलकर अपने मन की बात कहें । अपनी कठिनाइयों को सबके समक्ष रखें एवं हमारा श्रमण संघ किस प्रकार और उन्नति को प्राप्त कर सकता है इस पर विचार विमर्श हों । संघ में सुधार हो, धर्म का वातावरण हो । समाज की सेवा हो ।

सम्मेलन के लिए मेरी तरफ से कोई इन्कार नहीं है योग्य स्थान एवं योग्य समय के साथ सम्मेलन ले लिया जाएगा इस हेतु महामंत्री श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज को पत्र प्रदान कर चुके हैं । श्रमण संघ की एकता, अखण्डता और अनुशासन के लिए यदि पद त्याग करना पड़ा तो मैं पद त्याग करने के लिए तैयार हूँ । हम कार्य करें पद तो स्वयं आ जाता है कार्य करने के लिए आगे रहो इस पावन अवसर पर मैं अपनी मातृ संस्था जैन कांफ्रेंस को नही भूल सकता । इन्होंने बहुत बड़ी कुर्बानी की है । स्थान–2 पर जाकर समस्त संतवृंदों को एकता के लिए आगे बढ़ाया । हमारे पास भी कई बार आए । इनके मन में श्रमण संघ की एकता को लेकर एक पीड़ा थी जो पूर्ण हुई । हम सभी प्रेम से कार्य करें । विचारों को शुद्ध करें तो समस्त बाधाएं स्वतः ही दूर हो जाती है । धर्म के लिए जो कुछ करोगे वह सब मंगलकारी ही होगा ।

इस अवसर पर आचार्यश्रीजी ने जैन धर्म एवं श्रमण संघ के विश्व भर में जहां जहां पर भी चातुर्मास हो रहे हैं उन सभी चातुर्मास के लिए हार्दिक मंगल कामना की है कि सभी चातुर्मासों में वीतरागता का वातावरण हो । वीतराग धर्म की आराधना हो और हम सभी प्रभु महावीर की शिक्षाओं पर आगें बढ़ते हुए उनको जीवन में उतारें । प्रधान श्री रतनलाल जी जैन, महामंत्री श्री सुदर्शन जी जैन, मंत्री श्री प्रमोद जी जैन एवं समस्त जैन सभा के पदाधिकारीगणों को हार्दिक बधाई देना नहीं भूलूंगा । इनकी मेहनत की रंग लाई । प्रस्तुत चातुर्मास में ये सभी धर्म की ओर आगे बढ़ें और समस्त समाज को धर्म से जोड़ें यही इनके प्रति हार्दिक मंगल कामना । समारोह का समापन आचार्यश्रीजी के मंगलपाठ एवं मंगलमैत्री से हुआ ।

समस्त कार्यक्रम का संचालन स्थानीय श्रीसंघ के महामंत्री श्री सुदर्शन जी जैन ने बड़ी ही कुशलतापूर्वक किया । बाहर गांव से आए हुए सभी विशिष्ठ गणमान्यजनों का स्थानीय श्रीसंघ द्वारा हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन हुआ । इस अवसर पर समस्त भारतवर्ष से हजारों की संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे । दानवीर सुश्रावकों ने इस अवसर पर श्रीसंघ को विपुल मात्रा में दान राशि प्रदान की ।

आचार्यश्रीजी के दैनिक प्रवचन एस0एस0 जैन सभा, मोती बाजर, मालेर कोटला में दिनांक 17 जुलाई, 2008 से प्रारंभ होंगे एवं सभी प्रवचनों का प्रसारण ''श्रद्धा'' चैनल पर रात्रि 9.40 से 10.00 बजे तक होगा । आप सभी धर्म प्रभावना का लाभ लें । चातुर्मास प्रारंभ 17 जुलाई, 2008 से हो रहा है एवं ध्यान शिविरों की श्रृंखला 4 अगस्त, 2008 से प्रारंभ होगी । जो भी आनंद, शांति, ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं वो प्रवचन एवं ध्यान साधना का पूर्ण लाभ उठाएं ।

भारतीय योग संस्थान {पंजि0} द्वारा आचार्य भगवंत के पधारने की सूचना से हर्ष की लहर

मालेर कोटला 13 जुलाई, 2008 : श्री हनुमान मन्दिर परिसर में सम्पन्न भारतीय योग संस्थान {पंजि0}, शाखा मालेर कोटला का एक योग शिविर आयोजित हुआ उसमें साधक साधिकाओं ने भाग लिया । इस शिविर में डॉ0 सतीश कपूर ने श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज के मालेर कोटला चातुर्मास की सूचना शिविरार्थियों को दी और आशा व्यक्त की कि चातुर्मास से जन–जन को लाभ होगा और योग का कार्य भी आगे बढ़ेगा । इस शिविर में डॉ0 व समाज के विभिन्न वर्गों के शिविरार्थियों ने भाग लिया । सूचना को सुनकर सभी साधकों में खुशी की लहर दौड़ गई और सभी ने प्रण किया कि वे हर प्रकार से इस चातुर्मास को सफल बनाने में अपना योगदान देंगे । यह सूचना श्री सुरेन्द्र अग्रवाल लोहा बाजार, मालेर कोटला ने दी ।

संसार से अध्यात्म का संक्रमण करें
जैनाचार्य पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 16 जुलाई, 2008 { } युग पुरुष, राष्ट्र संत, जैन धर्म दिवाकर श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने संक्रांति के पावन अवसर पर अपनी मंगलमयवाणी में फरमाया कि– अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी भगवान को नमन । अरिहंत परमात्मा वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में भरत क्षेत्र से सबसे नजदीक हैं । महाविदेह क्षेत्र भरत क्षेत्र के इशान कोण में है । सर्वप्रथम प्रभु को हृदय की अनंत गहराई से वंदन । आज संक्रांति है । संक्रांति संक्रमण का संदेश देती है । संक्रमण यानि आगे बढ़ना । सूर्य एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है जब उसका संक्रमण होता है तब संक्रांति आती है । आज कर्क की संक्रांति, सावन का महीना, मूल नक्षत्र, आषाढ शुक्ला त्रयोदशी, तीस मुहूर्ती संक्रांति है । आप सभी खूब धर्म–ध्यान करें । प्रभु स्मरण और मूक प्राणियों की सेवा करें ।

सूर्य प्रकाश, ज्ञान, शान्ति का संदेश देता है । आज के पावन अवसर पर क्या संक्रमण करेंगे आप । संसार से अध्यात्म का संक्रमण करें । धर्म क्रियाकाण्ड में नहीं । मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारों में नहीं । हमारे हर कर्म में धर्म बने ऐसा विवेक और ऐसी जागरुकता भीतर ले आओ । हरपल हर क्षण कर्म निर्जरा में बिताओ । हमारा हर कार्य धर्म से जुड़ जाए । शिकायतभाव को छोड़ देना । आज तक बहुत सी शिकायतें की । आज से हम क्या कर सकते हैं यह सोचो । वर्षावास में किसी की निन्दा नहीं करना । निन्दा अधोगति की ओर ले जाती है । प्रभु महावीर का चतुर्विध श्रीसंघ मंगलकारी है । यहाँ पर निन्दा जैसा कुछ है ही नहीं । चातुर्मास में धर्म की ओर संक्रमित हो । रात्रि भोजन का त्याग, जमीकंद का त्याग, इच्छानुसार तप, साधना, सामायिक पोषध आदि की आराधना करें । चातुर्मास परलोक की पूंजी है । चातुर्मास में पाप पुण्य नहीं केवल निर्जरा ही निर्जरा करना । भगवान महावीर की वाणी है हे ! निर्मल ज्योति वाले पुरुष तूं पराक्रम कर, धर्म में पुरुषार्थ कर अपनी डिक्शनरी से कोशिश शब्द हटा देना । कोशिश शब्द एक बहुत राजनीतिक शब्द है । हो गया तो मैंने किया नहीं हुआ तो कोशिश की थी पर ना हो सका । हम कोशिश की जगह पुरुषार्थ करें । पुरुष वही है जो पुरुषार्थ करता है । पुरुषार्थ धर्म, साधना, आराधना का । प्रभु ने हमें अवसर दिया धर्म साधना करने का । हर कार्य करने के बाद आनंद, उल्लास का भाव भीतर आवे और भीतर से एक कृतज्ञता उठे तो समझना हम धर्मात्मा हैं ।

चातुर्मास में हम आत्म–दृष्टि को प्राप्त करेंगे । यह शरीर जो हमारा मालिक बना हुआ है, यह वास्तव में हमारा सेवक है । इसे सेवक–रुप में स्वीकार कर स्वयं मालिक बनो । मानव का शरीर परमात्म प्राप्ति के लिए मिला । बस दो कार्य जीवन में आ जाए तो जीवन सफल हो जाएगा । एक श्रम और दूसरा प्रार्थना । माँ अपने बच्चे को श्रम और प्रार्थना से ही बड़ा करती है । माँ की प्रार्थना अपने बच्चे के लिए हमेशा परमात्मा के चरणों में होती है । हम भी परमात्मा स्वरुप बनने के लिए अपनी प्रार्थना अरिहंत परमात्मा के चरणों में रखें । इस चातुर्मास में शरीर के स्तर पर स्वस्थता, मानसिक स्तर पर आनंद और आत्मिक स्तर पर आत्म–दृष्टि प्राप्त करने का हम सबका पूर्ण पुरुषार्थ हो । संक्रांति पर हम यही संदेश ले कि हम अध्यात्म की ओर संक्रमण करें ।

इस अवसर पर आचार्यश्रीजी ने श्रीसंघ के प्रधान श्री रतनलाल जी जैन एवं पूरे श्रीसंघ तथा मालेर कोटला शहर को तृतीया चातुर्मास की हार्दिक बधाई दी । स्थानीय श्रीसंघ एवं भक्तजनों की सेवा भक्ति, धर्म आराधना की मुक्तकंठ से प्रशंसा की ।

विश्वशांती हेतु 17 से 24 जुलाई, 2008 तक चौबीस घण्टे महामंत्र नवकार का अखण्ड पाठ एस0एस0 जैन सभा, मोती बाजार, मालेर कोटला में होगा । आचार्यश्रीजी के प्रतिदिन प्रवचन प्रातः 8.15 से 9.30 बजे तक होंगे एवं सभी प्रवचनों का प्रसारण श्रद्धा चैनल पर रात्रि 9.40 से 10.00 बजे तक होगा । आज के पावन अवसर पर अनेक श्रद्धालुजनों ने संक्रांति श्रवण कर जीवन को धर्ममय बनाया ।

गुरु को अपने दुर्गुणों की दक्षिणा दें
जैनाचार्य पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 17 जुलाई, 2008 { } युग पुरुष, राष्ट्र संत, जैन धर्म दिवाकर श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर अपनी मंगलमयवाणी में फरमाया कि– आज गुरुपूर्णिमा का पावन दिवस है गुरु शब्द बहुत महत्वपूर्ण शब्द है । गुरु कोई शिक्षक, अध्यापक, प्रोफेसर नहीं । गुरु वो है जो हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाता है । सत्य की राह दिखाता है । जीवन को सुख शांति समृद्धि और आनंद से भर देता है । गुरु एक अनूठा और गहरा शब्द है । आज तक इस शब्द की परिपूर्ण व्याख्या कोई नहीं कर पाया । गुरु छोटा शब्द होते हुए भी इसमें अनंत समाया है । एक महिमा, रोशनी इस शब्द के भीतर है । गुरु वह सूरज है जो अपनी लाखों करोड़ों किरणों से भवों–भवों के अंधकार को दूर कर देता है । कहते हैं सदियों बाद किसी गुरु का इस धरा पर अवतरण होता है । कहा भी है–

सत्गुरु की महिमा अनंत, अनंत कियो उपकार ।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावन हार ।

गुरु के प्रति एक गहरी श्रद्धा ही हमें परमात्मा से मिलाती है । गुरु जीवन की दशा बदल देते हैं । आज गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आप गुरु–चरणों में क्या समर्पित करोगे गुरु को क्या दक्षिणा दोगे । गुरु आपसे कोई पैसा, पद, प्रतिष्ठा नहीं मांगता वह तो आपकी खोट चाहता है । आपके भीतर जो दुर्गुण, दुर्व्यसन भरे हैं उन्हें गुरु पूर्णिमा पर गुरु दक्षिण में दे दो । अपना क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, वासना, राग, द्वेष, दुर्भावना सब गुरु दक्षिणा में समर्पित कर दो । लोहे को सोना करने वाले बहुत से मिलेंगे परन्तु लोहे से पारस बनाने वाले बहुत थोड़े ही होते हैं । सत्गुरु पारस स्पर्श के समान है जिसके पास जाने मात्र से उसके दर्शन मात्र से ही कल्याण हो जाता है । एक प्रार्थना अपने गुरु के चरणों में जो हमें इस देह से परमात्मा तक पहुंचा दे ।

आज वर्षाकालीन चातुर्मास का प्रथम दिवस आप सबके लिए मंगलकारी हो, शुभ हो । चातुर्मास तीर्थंकरों की परम्परा है । भगवान महावीर एवं वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में अरिहंत परमात्मा श्री सीमंधर स्वामी भगवान भी चातुर्मास करते हैं वर्ष भर में तीन चातुर्मास आते हैं एक शीतकालीन चातुर्मास, एक ग्रीष्म कालीन चातुर्मास एवं एक वर्षाकालीन चातुर्मास । इस वर्षाकालीन चातुर्मास का एक विशेष महत्व है । वर्षा ना हो तो अन्न पैदा नहीं हो सकता । चारों तरफ हरियाली नहीं छा सकती । भारत एक कृषि प्रधान देश है । इस देश में भूमि की रक्षा और पर्यावरण के संतुलन हेतु वर्षा का आना आवश्यक है । वर्षाकाल में हम सभी धर्म से जुड़ने का संकल्प लें । संकल्प से क्रियान्विती होती है और कार्य स्वतः ही सम्पन्न हो जाता है । चातुर्मास में हम सभी सेवा और साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ाए । अपने कषायों को कम कर तप के क्षेत्र में आगे बढ़ें । अपने हाथ से अतिथियों की सेवा करें । ध्यान रहे अपने द्वार से कोई भी खाली ना जाए । सेवा और साधना जीवन का अंग–संग बन जाए । बस एक सेवा का दीपक जलाओ । सारा जग स्वतः ही प्रकाशित हो उठेगा । इस चातुर्मास में कल्पवृक्ष की छांव में बैठकर इच्छित फल को प्राप्त कर लेना । इस अमृतवाणी की गंगा में डूबकर स्वयं को अमृतमय बना लेना ।

गुरु आत्म स्वरुप का बोध कराता है
जैनाचार्य पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 18 जुलाई, 2008 { } युग पुरुष, राष्ट्र संत, जैन धर्म दिवाकर श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने अपने मंगलमय प्रवचन में फरमाया कि– जीवन में आत्मा से परमात्मा जीव से शिव बनाने वाला अगर कोई सत्गुरु मिल जाए जो यह जन्म सफल हो जाता है । सत्गुरु एक प्रकाश है जैसे सूर्य उसकी पहली किरण धरती पर पड़ते ही अंधकार गायब हो जाता है ऐसे ही आत्म–ज्ञानी कोई सत्गुरु अगर जीवन में मिलता है तो व्यक्ति अंधकार से प्रकाश की ओर चला जाता है ।

गुरु एक प्रताप है रोशनी है महिमा है चमत्कार है । गुरु कुछ नहीं करता बस सान्निध्य प्राप्त होते ही स्वयं सब कुछ घटित हो जाता है । जैसे सूर्य धरती पर अंधकार को भगाने के लिए कुछ नहीं करता उसके आते ही अंधकार स्वयं भाग जाता है उसी प्रकार सत्गुरु के जीवन में आने से व्यक्ति जन्मों–जन्मों की तमस जन्मों–जन्मों के कर्म–बंधनों से मुक्त होकर मुक्ति की ओर बढ़ता है ।

पश्चिम ने वैज्ञानिक शब्द दिया भारत ने गुरु शब्द दिया । गुरु का अर्थ होता है ''गु'' यानि अंधकार ''रु'' यानि प्रकाश । अगर कोई सत्गुरु जीवन में मिले तो उसका सान्निध्य प्राप्त करने से चूकना मत । यह एक अपूर्व अवसर है क्योंकि अवसर बार–बार नहीं मिलता । श्रीमद रायचन्द्र सत्गुरु की महिमा बताते हुए कहते हैं :–

जे स्वरुप समज्या बिना, पाम्यो दुःख अनंत ।
समझाव्यो ते पद नमो, श्री सद्गुरु भगवंत ।।

सत्गुरु आत्म स्वरुप का बोध कराता है । जब तक व्यक्ति अपने स्वरुप का बोध प्राप्त नहीं करता तब तक वह दुःख पाता है और जब अपने स्वरुप को समझाने वाला सद्गुरु मिलता है तो उसके चरणों में समिर्पत हो जाना, झुक जाना, उसके चरणों को पकड़ लेना ताकि जन्मों–जन्मों का दुःख अंधकर समाप्त हो जाए ।

सत्गुरु के लक्षण बताते हुए आचार्यश्रीजी ने आगे फरमाया– कि वो आत्मज्ञान से परिपूर्ण सभी को समदृष्टि से देखने वाला और उसकी वाणी में एक अपूर्व ओज और परमश्रुत अर्थात् भगवान की वाणी को बताने वाला सत्गुरु कहा गया है । ऐसा सत्गुरु शरीर, प्रतिष्ठा, पद को महत्त्व नहीं देता । उसकी दृष्टि में आत्मा का ही महत्त्व है । वह स्वयं आत्म–ज्ञानी होता है और दूसरों को उस ओर लेकर जाता है।

जीवन में भ्रांति ही सबसे बड़ा रोग है
जैनाचार्य पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 19 जुलाई, 2008 { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने अपने मंगलमय प्रवचन में फरमाया कि– जीवन जीने के दो तरीके हैं एक जीवन राममय जीने का है दूसरा काममय जीने का है । राम का अर्थ दशरथ का पुत्र नहीं एक शुद्ध आत्मा, परमात्मा भगवान् अरिहंत कुछ भी कहो । राम शब्द बड़ा प्यारा है । राम–राम जपते अनेक व्यक्ति ज्ञान को उपलब्ध हो गए । उन्होंने राम–राम इस प्रकार जपा कि उनके भीतर का क्रोध, अहंकार, ममत्त्व, राग– द्वेष सब समाप्त हो गए । इन सबको समाप्त कर वो स्वयं राम हो गए । राम का नाम किस प्रकार लेना चाहिए यह शिक्षा सत्गुरु देता है । सत्गुरु एक औषधि है और सत्गुरु एक वैद्य है । ज्ञानीजन फरमाते हैं–

आत्म भ्रान्ति सम रोग नहीं, सत्गुरु वैद समान ।
गुरु आज्ञा समपत्य नहीं, औषध ध्यान विज्ञान ।।

इस जीवन में भ्रांति ही सबसे बड़ा रोग है । सत्गुरु–रुपी वैद इस भ्रांति का इलाज करता है । हम यह मान बैठे हैं कि यह शरीर आत्मा है जो भी किया मैंने किया जो करता हूं मैं करता हूँ इस बात की भ्रांति हमें हो गई है । यही रोग हमें संसार में भटका रहा है । इस रोग से सत्गुरु मुक्त कराता है । जिस प्रकार एक दवा अनेक रोगों में भिन्न–भिन्न तरीकों से ली जाती है ओर उसका भिन्न–भिन्न परिणाम होता है इसी तरह सत्गुरु बताता है राम का नाम किस तरह लेना है, कब लेना है कैसे लेना हैं । उसके द्वारा बताए गए ध्यान, विज्ञान का जब साधक अनुसरण करता है, उस पर चलता है गुरु की आज्ञा का पालन करता है तब वो व्यक्ति भ्रांति से मुक्त हो जाता है । दास मलुका का बड़ा सुन्दर है ।

मलुका सोईपीर है, जो जाने पर पीर ।
जो पर पीर ना जानिए, सो काफिर बेपीर ।

कितना सुन्दर वाक्य है कि जो पर की पीड़ा को जानता है वही सच्चा पीर है और जो पीड़ा को नहीं जानता है वो व्यक्ति पीर कहलाने के योग्य नहीं । पीड़ा क्या है ? इस संसार में भ्रमण क्या है ? यह वही व्यक्ति जान सकता है जिसने आत्म–ज्ञान को पाया है । संसार भ्रमण सबसे बड़ी पीड़ा है । इस पीड़ा से मुक्त कराने वाला ही सच्चा पीर कहलाता है ।

प्रार्थना होगी तो समर्पण होगा

जैनाचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 20 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने अपने मंगलमय प्रवचन को आरंभ करने से पूर्व एक प्रभु भजन जिसके शब्द थे– तुम मेरे जीवन के धन और प्राणाधार हो.....से शुरुआत की और वहाँ उपस्थित श्रद्धालुओं को भाव–विभोर कर दिया । उन्होंने कहा– एक प्रार्थना, एक भाव परमात्मा के चरणों में इस तरह का हो कि मेरा जो कुछ है वो तूं है । जीवन में दो दृष्टि है एक कर्म–दृष्टि और दूसरी समर्पण की दृष्टि । दोनों दृष्टि सत्य है । जैसा हम करते हैं वैसा हमें मिलता है । यह कर्म–दृष्टि । समर्पण में व्यक्ति का अहंकार समाप्त हो जाता है । जहाँ प्रेम है वहाँ बोझ नहीं । जिस व्यक्ति से प्रेम हो जाता है उसे हम अपना सब कुछ लुटा देते हैं । उसके पास बैठने में, उसकी बात सुनने में घण्टों उसके सान्निध्य में रहने से मन में तृप्ति होती है क्योंकि प्रेम समर्पण सिखाता है ।

मानव जीवन को पाकर अहंकार मत करना । यह जीवन प्रभु से प्रेम करने के लिए मिला है । जब प्रेम होगा तब प्रार्थना का जन्म होगा । प्रार्थना होगी तो समर्पण होगा । समर्पण होगा तो अहंकार स्वयं समाप्त हो जाएगा । प्रार्थना में शब्द का महत्त्व नहीं भाव का महत्त्व है । भाव से भक्ति पैदा होती है । भक्ति से प्रेम होता है और प्रेम से प्रार्थना होती है । किसी व्यक्ति को प्यास लगी है वह प्यासा है तो वहाँ पर पानी को पानी कहते हैं या जल कहते है नील, आव कहते हैं इस चीज का महत्त्व नहीं । महत्त्व है उसकी प्यास किस प्रकार समाप्त हो । वृक्ष पर जितने ज्यादा फल लगते है वह उतना ज्यादा झुकता है और जितना–2 प्रेम हृदय में आएगा उतना ही वह हृदय विनम्र होता चला जाएगा ।

प्रार्थना कहीं पर भी करें मन्दिर, मस्जिद, स्थानक, गुरुद्वारे में करें इसका कोई महत्त्व नहीं बस मन में भाव उठा और प्रार्थना कहीं भी कर दी । एक छोटा बालक जो बोलना नहीं जानता, जो चलना नहीं जानता जिसे माता, पिता पड़ौसी, दादा–दादी किसी की भी पहचान नहीं वो बालक भाव को पहचानता है । उसे कोई व्यक्ति किस भाव से बुलाता है वो बालक उसकी ओर आकर्षित होता है । अगर एक बालक आपके मनोभावों को जानता, समझता है तो क्या परमात्मा आपके मनोभावों को नहीं समझेगा ? उसके प्रति प्रेम, श्रद्धा और भाव से प्रार्थना करें । वही प्रार्थना मोक्ष–मार्ग की ओर हमें लेकर जाती है । प्रार्थना कैसे होनी चाहिए, किस प्रकार करनी चाहिए इन बातों पर आचार्य भगवंत आगे और विस्तार से प्रकाश डालेंगे यह सूचना श्रमण संघीय मंत्री श्री शिरीष मुनि जी महाराज ने दी ।

परमात्मा को बुद्धि से नहीं हृदय से जानो
जैनाचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 21 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने अपने मंगलमय प्रवचन में फरमाया कि– जिसे तुम परमात्मा मानते हो वो अनंत दया का सागर है । अनंत करुणावान है । यह बात हमने आज तक बुद्धि से जानी है और जब कभी हमें कष्ट आता है तो हम उस परमात्मा को कोसने लग जाते हैं । किसी व्यक्ति का जवान बेटा मर गया तो वो व्यक्ति परमात्मा को कोसने लग जाता है । सोचो जरा जो परमात्मा करुणावान, दयावान है वो तुम्हें कष्ट क्यों देगा । जो कुछ भी है वो तुम्हारे कर्मों का फल है । कभी ऐसा कर्म किया होगा जो आज भोगना पड़ रहा है । परमात्मा दयालु है यह बात हृदय से जानो । जब ये बात हृदय से जानी जाएगी तब परमात्मा के प्रति मन में अश्रद्धा उत्पन्न नहीं होगी । प्रभु से प्रार्थना करें कि प्रभो ! मेरे हृदय में प्रेम भर दो । घृणा का कोई स्थान ना रहे । जब घृणा निकल जाएगी तो परमात्मा स्वयं हृदय में वास करेगा । कबीर का एक सुन्दर वचन है :–

यह संसार सकल है मैला, राम कहे ते सुचा
क्हत कबीर नाम नहीं छोड़ो, गिरत पड़त चढ़ी ऊँचा ।।

इस संसार में दुःख है जो हृदय संसार में रचा पचा है वो मैला है । जिसके हृदय में राम है वही व्यक्ति सूच्चा अर्थात् स्वच्छ है । कबीर कहते हैं कि कितना ही दुःख आ जाए कितने ही कष्ट आ जाए नाम नहीं छोड़ना । व्यक्ति गिरते पड़ते ही चलना सीखता है । जब नाम का सहारा रहेगा तो वो व्यक्ति स्वयं ऊँचा उठ जाएगा ।

प्रार्थना अन्तःकरण का स्नान है । जैसे वर्षाऋतु में धरती की कठोरता, उसका रुखापन समाप्त हो जाता है उसके ऊपर वर्षा के छीटें पड़ते ही एक सुगंध उठती है चारों तरफ हरा–भरा हो जाता है इसी तरह व्यक्ति का हृदय कितना ही रुखा, कितना ही कठोर क्यों न हो प्रभु की प्रार्थना के छीटें पड़ते ही उसका अंर्तहृदय भीग जाता है ।

रोई उस बुत के आगे, इस कदर दो आंखे मेरी ।
कि पुतलियां दोनों, नहा–धोकर भ्रमण हो गई ।।

उस परमात्मा की भक्ति में अगर आंखों से आंसू भी बहे वो आंसू कर्ममल को धो देते हैं । उन आंसुओं में प्रभु का प्रसाद है । आंसू भी व्यक्ति तीन तरह से बहाता है । पहली तरह के आंसू– दुःख और पीड़ा में बहाए जाते हैं । दूसरी तरह के आंसू खुशियों में बहाए जाते हैं, तीसरी तरह के आंसू आनंद के आंसू हैं जो प्रभु भक्ति, उसकी प्रार्थना, उसके मिलन में बहते हैं । तीसरी तरह के आंसू सबसे श्रेष्ठ है । भक्ति में बह जाना जो भी हो उसे रोकना मत । भक्ति की थी चंदना ने जो प्रभु महावीर आए । भक्ति की थी प्रह्लाद ने जो भगवान् स्वयं आए । मीरा ने भक्ति की तो परमात्मा को पा लिया फिर हम क्यों नहीं पा सके । बस भक्ति करें, अपने अंर्तहृदय को भिगो डाले । परमात्मा अवश्य मिलेंगे ।

अरिहंत की भक्ति करने से भीतर समृद्धि का भाव प्रकट होता है
जैनाचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 22 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने प्रभु भक्ति भजन के द्वारा आज के प्रवचन का आरंभ करते हुए फरमाया कि– अरिहंत की भक्ति करने से भीतर समृद्धि का भाव प्रकट होता है । भीतर सम्पूर्णता का अहसास होता है । ये पांच इन्द्रियाँ यह सुन्दर काया श्वांस, धर्म आदि संस्कार हमें अपने पूर्वकृत कर्मों के द्वारा प्राप्त हुए हैं यह सत्य है परन्तु व्यक्ति बुद्धि के स्तर पर जीता है वो कहता है कि यह सब मेरा है । जहाँ पर ऐसा भाव आता है वहाँ पर बंधन होता है । हम दुकान चलाते हैं लोगों को रोजगार देते हैं मैंने इतना सुन्दर मकान बनाया, मेरे जैसा बुद्धिमान कोई नहीं इस प्रकार के भाव अहंकार की ओर ले जाते हैं । अगर हम यह सब प्रभु कृपा मान लें कि हे प्रभो ! यह सब तेरी कृपा से प्राप्त हुआ है तो मन का अहंकार समाप्त हो जाता है भीतर विनम्रता आती है और जब अहंकार को समाप्त कर विनम्र भाव से प्रभु भक्ति करते हैं सब कुछ उसके चरणों में समर्पित कर देते हैं मन वचन काया की एकरुपता से उस परमात्मा को याद करते हैं दुःख से घबराते नहीं सुख में फूलते नहीं मन में समभाव रखते हैं तो वो प्रार्थना कर्मक्षय का एक महान् साधन बन जाती है ।

भीखा बात अगम की, कहन सुनन की नाही ।
जो जाने सो कहे नहीं, कहे सो जाने नाहीं ।।

भीखा एक संत हुए वो कहते हैं कि रहस्य की बात अर्थात् सत्य की बात कहने और सुनने की नहीं जहाँ पर सत्य कहा और सुना जाता है वहाँ सत्य सत्य नहीं रहता । उसका स्वरुप बदल जाता है । यह बात अनुभव की है । जब हम कहना और सुनना छोड़कर इसे अनुभव कर लेते हैं उस रहस्य की प्रतीति हमें हो जाती है तब शब्द मौन हो जाते हैं । परमात्मा शब्दों से रिझाया नहीं जा सकता । परमात्मा को आपके शब्दों का कोई मूल्य नहीं । उसके पास आपके भाव पहुँचते हैं । सब कुछ परमात्मा का है यह मात्र शब्द नहीं भीतर का भाव होना चाहिए तब व्यक्ति अहंकार जनित कर्मों से बच सकता है । प्रार्थना शब्दों की डोर से बेशक बंधी हुई हो शब्दों का सहारा तो लेना ही पड़ता है परन्तु वो शब्द हमें भीतर गहराई में ले जाते हैं । शब्दों की मार्मिकता, शब्दों की सुन्दरता उसमें व्याकरण का कोई महत्त्व नहीं, महत्त्व है उसके भीतर भाव क्या है । शब्द कम ज्यादा हो सकते हैं मगर भाव पूर्ण हो तो परमात्मा भीतर ही प्रकट हो जाता है ।

आचार्यश्रीजी के चातुर्मासिक मंगलमय प्रवचनों का प्रसारण ''श्रद्धा'' चैनल पर रात्रि 9.40 से 10.00 बजे तक शुरु हो चुके हैं । यह सूचना एस0एस0 जैन सभा के महामंत्री श्री सुदर्शन जी जैन ने दी । चातुर्मास में बाहर से सिरसा, सरदूलगढ़, राजपुरा {आम्बे वाले}, आदि अनेक स्थानों से दर्शनार्थी लाभ ले रहे हैं । महामंत्र नवकार का जाप बड़े सुन्दर ढंग से एस0एस0 जैन सभा, मोती बाजार, मालेर कोटला में चल रहा है । श्री सुदर्शन जैन ने सभी को प्रेरणा दी कि ज्यादा से ज्यादा प्रवचनों में तप और जप में लाभ लें ।

मोक्ष का सुख संसार के सभी सुखों से बढ़कर है
जैनाचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 23 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने प्रभु भक्ति भजन के द्वारा आज के प्रवचन का आरंभ करते हुए फरमाया कि– परमात्मा को प्राप्त करने के दो मार्ग हैं ध्यान और भक्ति । जैन धर्म में ध्यान के साथ भक्ति को भी पूरा महत्त्व दिया गया है । जैन धर्म का मूल मंत्र नवकार महामंत्र भक्ति की जिन्दा उदाहरण है । भक्ति एक सरल मार्ग है । नवकार मंत्र में अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय व साधु के गुणों को नमन किया गया है । जब जीवन में नमन घटित होता है तो जीवन अहंकार शून्य हो जाता है । इसी प्रकार जैन धर्म में 24 तीर्थंकरों की स्तुति की गई है इस स्तुति का नाम लोगस्स है । इस लोगस्स के पाठ में तीर्थंकर परमात्मा का कीर्तन करते हुए उन्हें तीन लोग का स्वामी कहा गया है और मात्र कीर्तन करने से नमन, अर्चना व स्तुति का भाव प्रकट हो जाता है । ये पाठ भी कषाय में डूबी आत्मा के कर्म हल्के करने में सहायक है ।

प्रार्थना कोई शब्दों का जाल नहीं भीतर के भाव चरणों में समर्पित हों इसलिए प्रार्थना घटित होती है । भगवान महावीर ने धर्म के लिए कोई आयु नहीं बताई क्योंकि श्वांस का काई भरोसा नहीं । शरीर क्षण–भंगुर है । कब अस्वस्थ हो जाए इसका पता नहीं । जब तक शरीर स्वस्थ है तभी तक धर्म हो सकता है । प्रार्थना युवा मन की अभिव्यक्ति है । कई लोग समय की दुहाई देते हैं कि धर्म के लिए समय नहीं है पर मैं कहता हूँ कि चौबीस घण्टे में दो घण्टे शुद्ध भाव से धर्म कर लिया जाए तो आत्म–कल्याण निश्चित है ।

प्रार्थना के संदर्भ में जैन धर्म में आचार्य मानतुंग द्वारा रचित भक्ताम्बर–स्तोत्र का वर्णन करना आवश्यक है । उन्हें विक्रमादित्य राजा ने दरबार में बुलाकर चमत्कार दिखाने को कहा । आचार्य मानतुंग ने कहा– राजन् आत्मा से बढ़कर कोई चमत्कार नहीं । पर राजा ने नहीं माना । राजा ने आचार्य मानतुंग को 48 तालों वाली कोठड़ी में जंजीरों से बाँधकर कैद कर दिया । आचार्य मानतुंग ने भगवान ऋषभदेव की स्तुति आरंभ की । उनके अन्दर से एक–एक श्लोक घटित होता गया और हर श्लोक के बाद एक ताला खुलता गया इस प्रकार उन्होंने 48 श्लोकों के बाद सभी ताले खुल गए और आचार्य मानतुंग अपनी भक्ति के कारण बाहर आ गए । आज जैन धर्म की सभी परम्पराओं में भक्ताम्बर–स्तोत्र को सर्वमान्य भक्ति–सूत्र के रुप में प्रतिष्ठित किया गया है ।

मनुष्य मोक्ष का अधिकारी है मोक्ष में अनंत सुख है । संसार में चक्रवर्ती के भौतिक सुख से ज्यादा कोई सुख नहीं है पर चक्रवर्ती के सुख के सामने त्यागी तीर्थंकर भगवान् का सुख अनंत गुणा है । उनके चरणों में स्वर्ग के 64 इन्द्र अपने देव परिवार समेत उनके समवसरण में पधारते हैं । उन्हें 34 अतिशय और अष्ठप्रतिहार्यों का सुख प्राप्त है । जो तीन लोक में किसी भी जीव को प्राप्त नहीं है । वह अपने मंगलमय वाणी द्वारा स्वयं तिरते हैं और औरों को तिराते हैं इसीलिए उन्हें पुरुषों में उत्तम कहा गया है । स्वर्ग और मोक्ष एक समान नहीं है बल्कि उसमें बहुत अन्तर है ।

अरिहंत प्रभु के नाम स्मरण से जीवन आनंदमय बनता है
जैनाचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 24 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने प्रभु भक्ति भजन के द्वारा आज के प्रवचन का आरंभ करते हुए फरमाया कि– मानव जीवन की उपलब्धि इस बात में निहित है कि जीवन के संघर्ष में प्रभु का नाम सतत् चलता रहे तो जीवन आनंदमय बन जाता है । जैसे किसी मनुष्य को सर्दी लग रही हो तो अग्नि की गर्मी से उसकी सर्दी दूर हो जाती है कोई भूखा व्यक्ति भोजन करने के बाद भूखा कैसे रह सकता है यह बातें कदापि संभव नहीं है । हर श्वांस में अरिहंत, राम का स्मरण करते रहो तो जीवन अरिहंतमय, राममय बन जाता है । जैसे संत बाल्मिकी का जीवन राम का नाम लेने से परिवर्तित हुआ ।

मन प्रतिपल प्रतिक्षण बदलता रहता है । जीवन में श्वांस का बहुत महत्त्व है । हर मनुष्य श्वांस लेता है पर श्वांस का महत्त्व नहीं जानता । जैन धर्म में जब हम कायोत्सर्ग करते हैं तो श्वांस पर ध्यान लगाते हैं । श्वांस को आते जाते देखने से क्रोध, मोह शान्त हो जाता है फिर क्रोध को शान्त करने के लिए किसी मंत्र, यंत्र व तंत्र की साधना की जरुरत नहीं है । श्वांस की साधना की विधि बड़ी गहरी है । भगवान बुद्ध ने इसे आनापान सती कहा है ।

मनुष्य ही साधना कर सकता है । मनुष्य के मन में कषाय उत्पन्न होते रहते हैं और इस साधना से सभी कषाय यानि क्रोध, मान, माया, लोभ शान्त हो जाते हैं । साधना करना प्रवचन से अधिक लाभ है । साधना का अर्थ है जीवन पद्धति । साधना करनी हो तो हमें किसी भी प्रकार का बहाना नहीं करना चाहिए । जैसे– कोई मनुष्य कहे कि मेरे पास साधना करने के लिए समय नहीं है या हमें दुकान आदि धंधा करना है ये सारी बातें मन की चालाकियां हैं । इन बातों में हमें उलझना नहीं चाहिए इसीलिए हम ध्यान पद्धति पर जोर देते हैं और ध्यान शिविरों के माध्यम से जीव को समाधि में जीने की कला सिखाते हैं ।

संसार में दुःख ही दुःख है । बड़े–2 महत्वाकांक्षी सिकन्दर, चंगेजखां, हिटलर, नादिरशाह आदि इस दुनियां को जीतना चाहते थे उन्होंने भयंकर नरसंहार किए और अन्तिम समय खाली चले गए । अब उनका नाम कोई श्रद्धा से नहीं लेता । हमें मन, वचन, काया की एकरुपता से प्रभु का स्मरण करना चाहिए । प्रार्थना, भक्ति की ऊँचाईयों को छूना हो तो अहंकार छोड़कर विनम्र बनो । संसार में आत्मा के निर्मल–भावों का मूल्य है अहंकार का कोई मूल्य नहीं । निर्मल भावों से प्रभु का आचरण करने से आपको प्रभु की प्राप्ति अवश्य होगी ।

आत्म : ध्यान साधना शिविर ''बेसिक'' 4 से 8 अगस्त, 2008 को प्रातः 5.30 से 8.30 बजे तक एवं शाम को 3.00 से 5.00 बजे तक एस0एस0 जैन सभा, मोती बाजार, मालेर कोटला में सम्पन्न होने जा रहा है जिसमें आप सभी सादर आमंत्रित हैं । आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ भारतवर्ष से दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर जारी है ।

प्रार्थना के द्वारा साधक परमात्मा से जुड़ता है
जैनाचार्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 25 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने प्रभु भक्ति भजन के द्वारा आज के प्रवचन का आरंभ करते हुए फरमाया कि– जीवन के दो मार्ग है एक है संघर्ष का मार्ग और दूसरा है समर्पण का मार्ग । अक्सर मानव पहला मार्ग अपनाता है । संघर्ष में तनाव, बेचैनी व डिप्रेशन का जन्म होता है । ये दुःख को बढ़ाता है । समर्पण में व्यक्ति आनंद में रहता है परन्तु समर्पण का मार्ग बहुत ही कठिन है । समर्पण का मार्ग ऐसा है जैसे बच्चा बचपन में ही माँ के प्रति समर्पित होता है । माँ अपने खाने पीने सोने का ध्यान न रखते हुए बच्चे का पूर्ण–रुप से ध्यान रखती है । जब बच्चा संघर्ष करने लगता है तब माँ उसका ध्यान रखना भी छोड़ देती है ।

जीवन में समर्पण से विनय उत्पन्न होती है । जैन धर्म में विनय को धर्म का मूल कहा गया है और चाहे साधु हो चाहे श्रावक प्रत्येक को विनय धर्म पर चलने के लिए भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र के प्रथम अध्ययन में चलने का उपदेश दिया है । समर्पण में स्वीकारभाव आ जाए तो आनंद प्रगट होता है संघर्ष में अस्वीकार भावना से परेशानियाँ सताने लगती है, यह प्रकृति का नियम है ।

विनय से ही प्रार्थना का जन्म होता है । विनय और प्रार्थना पर्यायवाची शब्द है । एक सिक्के के दो पहलू है । प्रार्थना समर्पण की एक कला है । प्रार्थना के द्वारा साधक परमात्मा से जुड़ता है । हर धर्म में प्रार्थना का अपना महत्त्व है । ल्यूं टॉल्सटाय ने एक कथा के माध्यम से समर्पण और विनय का महत्त्व बताया है । कथा का सार इस प्रकार है– एक पादरी जो चर्च का अध्यक्ष था तीन अनपढ सन्यासियों को मिलने झील के पार जाता है और उन्हें चर्च द्वारा निर्मित शुद्ध प्रार्थना बताता है । पर वे तीनों सन्यासी जो कि भाषा–ज्ञान से अनभिज्ञ हैं वे कहते हैं कि हम तो परमात्मा को हमारे द्वारा निर्मित प्रार्थना से ही याद करते हैं ये लम्बी प्रार्थना हमारे बस का रोग नहीं । पादरी लम्बी प्रार्थना देकर जब जाने लगता है तो देखता है कि तीनों सन्यासी नदी के पानी के ऊपर चलते हुए उसके पास आ रहे हैं तब पादरी को पता चलता है कि सच्ची प्रार्थना इन अनपढ़ सन्यासियों के पास है ना कि हमारे द्वारा निर्मित प्रार्थना ।

ऐसी ही संक्षिप्त प्रार्थना है जिससे आपका परमात्मा से सीधा सम्पर्क प्राप्त हो सकता है वह है ''मैं और मेरा परमात्मा'' । संसार में मानव अनंतकाल से कर्मवश के वशीभूत भटक रहा है । संसार का इतिहास भी इतना ही पुराना है जितना मानव आत्मा का इतिहास । इसमें एक ही नई बात है वह है प्रार्थना द्वारा परमात्मा को पाना । जब तक अरिहंत परमात्मा पर पूर्ण श्रद्धा नहीं हो पाती तब तक मनुष्य को सुख का खजाना मिलना असंभव है ।

आत्म : ध्यान साधना शिविर ''बेसिक'' 4 से 8 अगस्त, 2008 को प्रातः 5.30 से 8.30 बजे तक एवं शाम को 3.00 से 5.00 बजे तक एस0एस0 जैन सभा, मोती बाजार, मालेर कोटला में सम्पन्न होने जा रहा है जिसमें आप सभी सादर आमंत्रित हैं । आचार्यश्रीजी के दर्शनार्थ भारतवर्ष से दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर जारी है ।

मानव देह परमात्मा का मन्दिर है
जैनाचार्य पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 27 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने प्रभु भक्ति भजन के द्वारा आज के प्रवचन का आरंभ करते हुए फरमाया कि– शासन प्रभु महावीर की वाणी जीवन को आनंदित करती है । प्रभु महावीर ने फरमाया है– जीवन अशाश्वत् है वह मिटने और परिवर्तन होने वाला है । जीवन में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि पुरुष है या स्त्री छोटा है या बड़ा धनी है या निर्धन है तो अस्थिर है । मोक्ष स्थिर है । सिद्धालय चले जाओ तो वापस लोटकर नहीं आत`वहां का सुख अनंत है । संसार के काम भोग क्षण–भंगुर है । किंपाक फल दिखने में सुन्दर होता है पर भीतर जहर होता है । फल खाने के बाद काँच की चुंड़ियाँ के समान है पहनोगे नहीं तो टूटने को तैयार रहती है । इन चुड़ियों को हम सुन्दर समझते हैं पर वास्तव में ये नजर का धोख है जो कार्य के दौरान टूटनी शुरु हो जाती है ।

मानव देह को परमात्मा का मन्दिर कहा गया है । मानव शरीर में श्वांस का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है । श्वांस का कायोत्सर्ग में प्रयोग किया जाता है जो जैन साधक के जीवन का अभिन्न अंग है । दिन के चौबीस घण्टे में कम से कम दो घण्टे स्वयं के लिए निकालो । धर्म श्रवण वीतराग प्रभु का करो । श्रवण श्रद्धापूर्वक करना परमावश्यक है ।

भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र में श्रद्धा को परम् दुर्लभ अंग माना है । प्रभु की वाणी गणधर गौतम ने सुनी श्रद्धापूर्वक सुनी थी तो वे केवलज्ञान को उपलब्ध हो गए । वही मंखली पुत्र गौशालक ने संदेह से सुनी और वे मिथ्यात्व में फंस गया । अन्तिम समय तक उसी मिथ्यात्व में फंसा रहा । जीवन की अन्तिम बेला में उसको जब सम्यक्त्व का उदय हुआ तो उसने अपने कर्म की निन्दा, आलोचना करते हुए स्वर्ग को प्राप्त कर लिया । अगर वह उसी समय भगवान की वाणी मान लेता तो निश्चय ही वह मोक्ष प्राप्त करता । इसीलिए मैं कहता हूं कि अश्रद्धा अज्ञान का कारण है । श्रद्धा ही सम्यक्त्व है ।

ध्यान शुद्ध सामायिक का लाभ अनुभव से ही प्राप्त हो सकता है । ध्यान आत्मा का विषय है आत्मा को आज तक कोई देखने सुनने समझने का दावा नहीं कर सका है जिन्होंने आत्मानुभव किया है वे आत्मा के बारे में बताने के विषय में असमर्थ पाते हैं । मोक्ष में परम सुख है । उसे प्राप्त करने का सरलतम साधन ध्यान है । जीव जब कर्मों से पूर्णतः मुक्त हो जाते हैं तभी उसे मोक्ष प्राप्त होगा । परम सुख का अंशतः अनुभव ध्यान माध्यम से होता है ।

रविवार के प्रवचन के पश्चात् स्थानीय शिवाचार्य जन सेवा कल्याण समिति द्वारा जैन स्थानक, मोती बाजार के समक्ष लंगर लगाया गया । इस अवसर पर शिवाचार्यश्रीजी ने कहा कि– अगर भूखे को खाना मिल जाए तो इससे बड़ा उपकार निश्चिततौर पर कोई और नहीं हो सकता । उन्होंने इस लंगर में तन, मन, धन से सेवा करने वालों को साधुवाद दिया । इस मौके पर समिति के प्रमुख कार्यकर्ता तीर्थ जैन, संजय जैन, रितु जैन आदि ने लंगर में अपना सहयोग प्रदान किया ।

भौतिक साधन जीवन को आनंदित नहीं कर सकते
जैनाचार्य पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 28 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने प्रभु भक्ति भजन के द्वारा आज के प्रवचन का आरंभ करते हुए फरमाया कि– सदगुरु के चरणों में नमन करने से जीवन अहोभागी बनता है । श्रद्धा व समर्पण से साधक का अहंकार विलीन हो जाता है । खाते–पीते उठते–बैठते भक्त अरिहंत परमात्मा के ध्यान में तल्लीन रहता है । भौतिक सुख की आकांक्षा उसकी समाप्त हो जाती है । मन की इच्छा पर भी वह नियंत्रण रखता है । मानव जब तृप्त होता है फिर उसकी आत्मा का दीया जलता है । मानव तृप्ति की ओर जब उन्मुख होता है तब धर्म की ओर अग्रसर होता है । प्रार्थना में साधक का जीवन फूल की भांति तृप्ति को प्राप्त करता है । फूल में तृप्तता का गुण है पर बनावटी फूलों में ये तृप्तता नहीं पाई जाती । प्रकृति को मानव दुःख देता है व प्रकृति मानव को आनंदित करती है ।

भौतिक साधन मनुष्य को कभी आनंदित नहीं कर सकते । मनुष्य संसार के पीछे वास्तव में आनंद को ढूंढता है । जितना–जितना वह भौतिक साधनों में फंसता है उतना–2 वह दुःख उठाता है । स्वयं श्रमण भगवान महावीर ने फरमाया है कि– आत्मा ही परमात्मा है, इसलिए मैं कहता हूँ कि आप आत्मा के महत्त्व को पहचानों । आत्मा का महत्त्व प्रार्थना के माध्यम से सरलता से पहचाना जा सकता है क्योंकि प्रार्थना में समाधि घटित होती है इसलिए आप आत्मा के महत्त्व को पहचानो । रुपक की परिभाषा में कहूँ तो हर आत्मा की चार पत्नियाँ है । सबसे छोटी पत्नी है मनुष्य का शरीर जो अन्तिम समय मनुष्य का साथ छोड़ देता है । तीसरी पत्नी है मनुष्य की धन सम्पत्ति है जो जीवन में साथ देती है मृत्यु के बाद नहीं । दूसरी पत्नी है मित्र, रिश्तेदार व परिजन है जिनका साथ श्मशान घाट तक का है वो भी साथ छोड़ देती है और पहली पत्नी मनुष्य की आत्मा है जो उसका साथ किसी जन्म में भी नहीं छोड़ती सौ मनुष्य इसी आत्मा के स्वरुप को भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन–सूत्र में आत्मा के महत्त्व को स्वीकारते हुए यहाँ तक फरमाया है कि आत्मा ही कर्म का कर्त्ता और भोक्ता है ।

आत्मा ही स्वर्ग की कामधेनू गाय और नन्दनवन है । अपनी आत्मा ही बेतरणी नदी और कूटशामली वृक्ष है । आत्मा ही कर्म करता है और आत्मा ही कर्म का भोक्ता है । सो हमें अपनी आत्मा की पत्नी का पूर्ण ध्यान रखते हुए उसे धर्म–ध्यान व शुक्ल–ध्यान की ओर लगाना चाहिए ताकि जन्म–मरण की परम्परा समाप्त हो और जीवात्मा का परम् लक्ष्य निर्वाण की उपलब्धि हो ।

नमन जोड़ता है अहंकार तोड़ता है

जैनाचार्य पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज

मालेर कोटला 31 जुलाई { } जैन धर्म दिवाकर, श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर, आचार्य सम्राट् पूज्य श्री शिवमुनि जी महाराज ने अपने मंगलमय प्रवचन में फरमाया कि– भक्ति के तीन अंग है प्यास, प्रार्थना और प्रतीक्षा । प्रथम अंग प्यास है । भीतर प्यास होगी तभी इच्छित वस्तु की प्राप्ति होगी । प्यास से ही पानी मिलता है । पानी की प्यास ना हो और पानी सामने आ जाए तो उसका मूल्य नहीं होता । इसी तरह एक भक्ति की प्यास होगी तो परमात्मा भीतर आएगा । अरिहंत परमात्मा जो सर्वेसर्वा है जो धर्म का ज्ञान देते हैं हमारी भक्ति उनके चरणों में हो । सम्यक्त्व का पाठ कहता है अरिहंत मेरे देव हैं सुसाधु मेरे गुरु है जिनप्ररुपित धर्म मेरा धर्म है और ऐसी सम्यक्त्व को मैं स्वीकार करता हूँ । सम्यक्त्व यानि सत्य का दर्शन । जो हमें अपने सत्य का ज्ञान कराये वह सम्यक् दर्शन है ।

अरिहंत परमात्मा हमारे देव हैं । एक अतिथि को आप जितना सम्मान देते हो उससे अधिक सम्मान अपने देव के प्रति हो । घर पर एक अतिथि आए तो आप उस अतिथि को मीठे वचन और बढ़िया भोजन और आतिथ्य सत्कार से अपना बना लेते हो परन्तु अगर मीठे वचन ना हो तो बढ़िया भोजन और आतिथ्य सत्कार काम नहीं आता । एक ही कार्य है जिसे तीन तरह से किया जा सकता है पुण्य, पाप और निर्जरा से ।

नमोत्थुणं पर हम चिन्तन कर रहे हैं । नमोत्थुणं में नमन, प्रार्थना है । गुरु को वंदन तिक्खुतो के पाठ से किया जाता है परन्तु अरिहंतों को वंदन नमोत्थुणं से किया जाता है । नमोत्थुणं एक चित्त की दशा है, हृदय का भाव है । अगर भाव शुद्ध होगा तो भावनाएं स्वतः ही शुद्धता की ओर आ जाएगी ।

परमात्मा के अधीन होना, समर्पण में आना, नमन के भावों में आना ही सच्ची प्रार्थना है । अगर भीतर समर्पण आएगा तो मंजिल स्वतः प्राप्त हो जाएगी । अहंकार से भरी प्रार्थना हमें मंजिल प्राप्त नहीं करवा सकती । नमन जोड़ता है, अहंकार तोड़ता है । नमोत्थुणं में नमन है अरिहंतों को जिन्होंने चार कर्म क्षय किए । जिन्हें तीनों लोकों का ज्ञान है । जो एश्वर्य से पूर्ण है । जिन्होंने धर्म की आदि की है । इस चौबीसी की शुरुवात में प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव भगवान ने गृहस्थ जीवन में रहते हुए जन–मानस को धर्म और नीति का ज्ञान दिया और धर्म की स्थापना की । हम उस धर्म से जुड़े । माता पिता गुरु और धर्म का हम पर अनंत उपकार है, उस उपकार को भक्ति, आनंद और भीतर की कृतज्ञता से उतारें ।